This question paper contains 8+4 printed pages]

आपका अनुक्रमांक.....

7626

B.A. (Programme)/II E-I

HINDI DISCIPLINE—Paper II

हिंदी अनुशासन—प्रश्न-पत्र II

(हिंदी गद्य विधाएँ, उपन्यास और हिंदी गद्य साहित्य का परिचयात्मक इतिहास)

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 100

(इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।)

I. सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 12+12=24

(क) करुणा अपना बीज अपने आलंबन या पात्र में नहीं फेंकती है अर्थात् जिस पर करुणा की जाती है वह बदले में करुणा करने वाले पर भी करुणा नहीं करता—जैसा कि क्रोध और प्रेम में होता है—बल्कि कृतज्ञ होता अथवा श्रद्धा या प्रीति करता है । बहुत-सी औपन्यासिक कथाओं में यह बात दिखाई

P.T.O.

गई है कि युवतियाँ दुष्टों के हाथ से अपना उद्धार करने वाले युवकों के प्रेम में फँस गई हैं। कोमल भावों की योजना में दक्ष बँगला के उपन्यास-लेखक करुणा और प्रीति के मेले से बड़े ही प्रभावोत्पादक दृश्य उपस्थित करते हैं ।

अथवा

केवल उसके स्वभाव में अभिमान की मात्रा इतनी थी कि वह दोष की सीमा तक पहुँच जाती थी। अच्छे कपड़े पहनना उसे अच्छा लगता था और वह शौक ग्राहकों के कपड़ों से पूरा हो जाता था । गहने भी उसकी माँ ने कम नहीं छोड़े थे । विवाह-संबंध उसके जन्म से पहले ही निश्चित हो गया

था। पाँचवें वर्ष में ब्याह भी हो गया, पर गौने से पहले ही वर की मृत्यु ने उस संबंध को तोड़कर, जोड़ने वालों का प्रयत्न निष्फल कर दिया । ऐसी परिस्थिति में, जिस प्रकार उच्च वर्ग की स्त्री का गृहस्थी बसा लेना कलंक है, उसी प्रकार नीच वर्ग की स्त्री का अकेला रहना सामाजिक अपराध है ।

ख) नाटक की समस्त परंपरागत मान-मर्यादाओं को तोड़कर उसे--बीसवीं सदी के विशिष्ट प्रतीक के रूप में--सर्वथा नया मोड़ देने वाला यह जर्मन लेखक एक फासिस्ट-विरोधी, कम्युनिस्ट भी हो सकता है, पश्चिम के आलोचकों के लिए यह हमेशा एक विवादास्पद विषय बना रहा है । आश्चर्य नहीं कि अभी तक समाजवादी देशों में भी उनके क्रांतिकारी

प्रयोगों का ठीक से मूल्यांकन नहीं हो पाया । पश्चिम के साहित्यकार ब्रेख्त के महान कृतित्व को स्वीकार करते हैं—उनके कम्युनिस्ट व्यक्तित्व को नहीं ।

अथवा

अमृत चुरा लाने के लिए जो राजकुमार किसी ज़माने में गया था, वह भी शायद इतनी सावधानता के साथ और समझ-बूझकर न गया होगा । गंगी दबे पाँव कुएँ के जगत पर चढ़ी । विजय का ऐसा अनुभव उसे पहले कभी न हुआ था । उसने रस्सी का फंदा घड़े में डाला । दाएँ-बाएँ चौकन्नी दृष्टि से देखा, जैसे कोई सिपाही रात को शत्रु के किले में सूराख कर रहा हो । अगर इस समय वह पकड़

ली गई, तो फिर उसके लिए माफी या रियायत की रत्ती भर भी उम्मीद नहीं। अंत में देवताओं को याद करके उसने कलेज़ा मजबूत किया और घड़ा कुएँ में डाल दिया ।

2. (क) किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 4×5=20

(*i*) चैतन्य पूजा से ही मनुष्य का कल्याण हो सकता है ? 'मज़दूरी और प्रेम' निबंध के आधार पर स्पष्ट कीजिए ।

(*ii*) 'अशोक के फूल' निबंध में लेखक क्या संदेश देना चाहते हैं ?

(*iii*) 'अब अधिकांश घरों को पालने वाले खत्म हो गए' कथन किसने और क्यों कहा ?

(iv) निर्मल वर्मा ब्रेख्त को किस रूप में याद करते हैं ?

(v) बुधिया के जीवन में आए बदलाव को स्पष्ट कीजिए ।

(vi) 'आप साधु हैं, आपको दुनियादारी समझ में नहीं आती । दरख्वास्तें पेपरवेट से नहीं दबतीं ।' कथन का निहितार्थ स्पष्ट कीजिए ।

(ख) किन्हीं **तीन** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 3×3=9

(i) राधा कौन थी ? हरिवंशराय बच्चन से उनका क्या रिश्ता था ?

(ii) यमदूत के अनुसार पृथ्वी पर किस प्रकार का व्यापार चल निकला है ?

(*iii*) जर्मनी के जख्म अभी हरे हैं—लेखक ने ऐसा क्यों कहा ?

(*iv*) शकलदीप बाबू ने कर्ज़ क्यों लिया ?

(*v*) 'मनुष्य अपने लिए संसार आप बनाता है' कथन को स्पष्ट कीजिए ।

(*vi*) लेखक अकाल को प्राकृतिक आपदा क्यों नहीं मानता ?

(*vii*) 'वापसी' कहानी के रचनाकार का नाम लिखिए ।

3. किसी **एक** की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : 11

(क) जालपा ने रमा से कभी दिल खोलकर बात न की थी। वह इतनी विचारशील है, उसने कभी अनुमान ही न किया था । वह उसे वास्तव में रमणी ही समझता था । अन्य पुरुषों की भाँति वह भी पत्नी को इसी रूप में देखता था । वह उसके यौवन

पर मुग्ध था। उसकी आत्मा का स्वरूप देखने की चेष्टा ही न की। अगर वह रूप-लावण्य की राशि न होती, तो कदाचित् वह उससे बोलना भी पसंद न करता। उसका सारा आकर्षण, उसकी सारी आसक्ति केवल उसके रूप पर थी। वह समझता था, जालपा इसी में प्रसन्न है। अपनी चिन्ताओं के बीच से वह उसे दबाना नहीं चाहता था, पर आज उसे ज्ञात हुआ, जालपा उतनी ही चिन्ताशील है, जितना वह खुद था। इस वक्त उसे अपनी मनोव्यथा कह डालने का बहुत अच्छा अवसर मिला था—पर हाय संकोच। हाँ, आज उसे ज्ञात हुआ कि विलास पर प्रेम का निर्माण करने की चेष्टा करना उसका अज्ञान था।

(ख) विवाहित जीवन के इन दो-ढाई सालों में कभी उसका हृदय अनुराग से इतना प्रकल्पित न हुआ था । विलासिनी रूप में वह केवल प्रेम के आवरण के दर्शन कर सकती थी । आज त्यागिनी बनकर उसने उसका असली रूप देखा । कितना मनोहर, कितना विशुद्ध, कितना विशाल, कितना तेजोमय ! प्रेम अपने उच्चतम स्थान पर पहुँचकर देवत्व से मिल जाता है । जालपा को अब कोई शंका नहीं है, इस प्रेम को पाकर वह जन्म-जन्मांतरों तक सौभाग्यवती बनी रहेगी । इस प्रेम ने उसे वियोग, परिस्थिति और मृत्यु के भय से मुक्त कर दिया—उसे अभय दान कर दिया । इस प्रेम के सामने अब सारा संसार और उसका अखण्ड विभव तुच्छ है ।

(ग) जो होना था सो तो हो ही गया, और चलो अच्छा ही हुआ । सारी जिन्दगी उस तनाव में काटने की अपेक्षा तो उससे मुक्त होना लाख गुना अच्छा था । यह कानूनी कार्यवाही हो जाएगी सो भी अच्छा ही रहेगा । यह सम्बन्ध ही ऐसा है कि लाख लड़-भिड़ लो, अलग रहने लगो, पर कहीं न कहीं आशा का एक तंतु जुड़ा ही रह जाता है । वह आशा चाहे ज़िन्दगी भर पूरी न हो··· होती भी नहीं है··· फिर भी मन है कि इधर-उधर नहीं जाता, बस उसी में अटका रह जाता है ।

(घ) सब लोग केवल उससे चाहते ही हैं और वह उनकी चाहनाओं को पूरती रहे यह एकमात्र रास्ता है उसके लिए । बस, वह कुछ न चाहे । जहाँ चाहती है,

वहीं गलत क्यों हो जाती है ? ऐसा अनुचित-असम्भव भी तो उसने कुछ नहीं चाहा । एक सहज सीधी जिन्दगी, जिसमें रहकर वह कम से कम यह तो महसूस कर सके कि वह ज़िन्दा है । केवल सूरज डूब-उगकर ही उसे रात होने और बीतने का एहसास न कराये, उसके अतिरिक्त भी 'कुछ' हो । कितनी सहज-स्वाभाविक इच्छाएँ थीं उसकी ! फिर भी सब गलत, केवल इसलिए कि वे उसकी थीं। जहाँ जस्टिफ़िकेशन है, समझ लो वहाँ गिल्ट है ।

1. किसी **एक** प्रश्न का उत्तर दीजिए : 12

(*i*) जालपा का चरित्रांकन कीजिए ।

(*ii*) 'गबन' उपन्यास के माध्यम से प्रेमचन्द ने भारतीय समाज की 'तस्वीर' उतार दी है—स्पष्ट कीजिए ।